

## राष्ट्र की प्रगति की कसमें तो सब खाते हैं। पर जीवन में अनुशासन नहीं अपनाते हैं।।

दुनिया के हर व्यक्ति के जीवन में अनुशासन विद्यमान रहता है। माता पिता अपने बच्चों को बचपन से ही अनुशासन का पाठ पढ़ाते हैं। ऐसा ही पाठ बालक बालिकाओं को अपनी शालाओं में पढ़ने को मिलता है।

अनुशासन में असंभव को भी संभव बनाने की शक्ति निहित है। हर व्यक्ति के जीवन में प्राकृतिक तौर पर अनुशासन विद्यमान रहता है और जब उसे बचपन से ही अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता है तो वह अनुशासन की दृष्टि से समृद्ध हो जाता है।

यह बात अलग है कि युवावस्था में जब बच्चों को ऐसा माहौल मिलता है जिसमें अनुशासन टूटता बिखरता है तो फिर उसका जीवन ही गर्त की ओर जाने लगता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सहित हमारे सत्ताधारी नेता प्रायः रोज ही देश की प्रगति और विकास की बातें करते हैं मगर स्वयं नफरत और रागद्वेष बरतते हैं तथा जब हम देखते हैं कि प्रगति और विकास केवल कुछ ही व्यक्तियों और परिवारों तक ही सीमित है तथा समाज के अतिम व्यक्ति तक उसकी पहुंच नहीं हो पाई है तो आम आदमी को पछतावे के अलावा और कुछ हाथ नहीं लगता।

इसका प्रमुख कारण यह है कि समाज में अनुशासन नाम मात्र को रह गया है तथा समग्र दृष्टि से देखें तो अनुशासनहीनता ने सारी हदें पार कर दी है। जिस तरफ नजर डालो हमें अनुशासनहीनता ही नजर आती है। इसका कारण यह है कि जब हमारे नेता ही अनुशासन की मर्यादा तोड़ रहे हैं तो फिर आम जनता में अनुशासन की बात करना ही फिजूल है। वह समय गया जब भारत विश्व गुरु कहलाता होगा किंतु आज तो वह दीन हीन और अत्यंत गिरी हुई अवस्था में आ चुका है। इसका प्रमुख कारण यह है कि परिवार बिखर गए हैं और जो एकल परिवार हैं उनमें निरंकुशता हावी हो गई है।

वह समय गया जब संयुक्त परिवार होते थे और इन परिवारों में जब कोई नया सदस्य आता था तो उसे बचपन से ही मां-बाप और परिवार के अन्य सदस्य अनुशासन की शिक्षा देते थे तथा स्वयं अनुशासित जीवन व्यतीत करते थे। फिर जब कोई बालक/बालिका को गुरुकुल या विद्यालय में पढ़ने भेजा जाता था तो वहां अनुशासित दिनचर्या का पालन कर वह आगे बढ़ता जाता था और परिवार में लौटकर समाज का जिम्मेदार व स्वावलंबी नागरिक बन देश दुनिया की कल्याणकारी गतिविधियों में हाथ बटाने लगता था। स्वाधीनता आंदोलन के दौर में भी टैगोर

त्वरित विचार  
अग्र लेख-२३



कैलाश आदमी

और गांधी जैसे महापुरुष हुए जिनकी अपनी स्वानुशासित जीवन शैली आम आदमी के लिए प्रेरणा स्रोत बनी और नागरिकों ने स्वाधीनता प्राप्त कर देश को नई दिशा दी।

यह बात अलग है कि कालान्तर में दलगत और अपराध ग्रस्त राजनीति हावी होती चली गई जिसके लिए किसी एक व्यक्ति या संस्था को दोष देना उचित प्रतीत नहीं होता। सच्चाई यह है कि वर्तमान अव्यवस्था, असमानता, चारित्रिक और नैतिक गिरावट के लिए हम सब दोषी हैं और जब तक हम इस सच्चाई को स्वीकार करते हुए व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन करने के लिए आगे नहीं आएं तब तक हमारा देश दिनों दिन पतित ही होता जाएगा। कवि दुष्यन्त ने ठीक ही कहा था-हिम्मत से सच कहो तो बुरा मानते हैं लोग, रो रो के बात कहने की आदत नहीं रही।

जनतंत्र में नोट से ज्यादा महत्व वोट अर्थात् मताधिकार का होता है किंतु अधिकांश लोग अपने मत का दान कर मौन हो जाते हैं जिसके कारण चुने हुए प्रतिनिधि निरंकुश हो जाते हैं। आज जो दलीय व्यवस्था है उसके अंतर्गत अनुशासन का अभाव है और ऐसी स्थिति में सामूहिक चेतना के स्थान पर व्यक्तिपरकता में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही जाति, संप्रदाय और क्षेत्रीयता में वृद्धि होने के साथ ही धार्मिक दिखावा हावी हो गया है। ऐसी स्थिति में लोकतंत्र पर संकट गहराता जा रहा है।

जीवन में ऐसे अवसर आते हैं जब आम आदमी कुछ समय के लिए पीछे धकेल दिया जाता है। ऐसे समय यदि आम आदमी विशेष कर जेन जी कहीं जाने वाली नई पीढ़ी चैतन्य ना हो तो तानाशाहों की मनमानी पर अंकुश लगाया जाना संभव नहीं हो पाता है। दुख की बात यह है कि समुचित शालेय शिक्षा के अभाव में नई पीढ़ी अनुशासन बिहीनता की शिकार हो गई है। हम अपने पड़ोसी देश नेपाल व बांग्लादेश में इस पीढ़ी का तमाशा देख ही चुके हैं। यह तमाशा भारत में न दोहराया जाए इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि बच्चों को कट्टर पंथ का पाठ पढ़ाने वाले शिशु मंदिरों, मदासों और गिरजाघरों द्वारा संचालित शालाओं में पढ़ने ना भेजा जाए और न ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी संस्थाओं की शाखाओं में भेजा जाए जो राष्ट्र निर्माण और चरित्र निर्माण की आड़ लेकर किसी दल विशेष के लिए कार्यकर्ता तैयार करते हैं।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-  
राष्ट्र की प्रगति की कसमें तो सब खाते हैं।  
पर जीवन में अनुशासन नहीं अपनाते हैं।।

## क्या समाज में सम्मान का आधार पैसा होना चाहिए?

समाज में व्यक्ति की पहचान कई आधारों पर तय होती है, जैसे कि उस व्यक्ति का अनुभव, उसका स्वभाव, उसकी नैतिकता, और दुर्भाग्य से, उसकी आर्थिक स्थिति से भी। विशेष रूप से वृद्धावस्था में, जब शारीरिक शक्ति कम हो जाती है और आय के स्रोत सीमित हो जाते हैं, तब आर्थिक स्थिति का प्रभाव और अधिक स्पष्ट दिखाई पड़ने लगता है।



रमा निगम

प्रश्न यह है कि क्या केवल जेब में पैसा होना परिवार और समाज के नजरिए को बदल देता है? वास्तविकता तो यही दर्शाती है कि अक्सर हमारे समाज में वृद्ध व्यक्तियों के साथ ऐसा होता है।

जब किसी वृद्ध व्यक्ति के पास पर्याप्त धन या पेंशन होती है, तो वह आर्थिक रूप से किसी और पर निर्भर न रहकर आत्मनिर्भर रहता है। इस आत्मनिर्भरता के कारण परिवार के सदस्य उन्हें बोझ नहीं, बल्कि एक सहारा मानते हैं। ऐसे में उनकी राय को महत्व दिया जाता है, उन्हें छोटे-बड़े निर्णयों में शामिल किया जाता है और उन्हें आदर व सम्मान दिया जाता है।

इसके विपरीत, यदि कोई वृद्ध आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर है, तो कई बार जाने-अनजाने में परिवार का व्यवहार बदल जाता है। ऐसे में वृद्ध व्यक्ति का सम्मान कम हो सकता है और उन्हें कुछ या सभी निर्णयों से दूर रखा जा सकता है।

पैसा व्यक्ति को निर्णय लेने की शक्ति देता है। जिन वृद्धों के पास संपत्ति, पेंशन या बचत होती है, वे परिवार के महत्वपूर्ण फैसलों में प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। उनकी बात को गंभीरता से सुना जाता है क्योंकि वे आर्थिक रूप से सक्षम होते हैं और आर्थिक योगदान भी कर सकते हैं।

यह स्थिति ग्रामीण और शहरी दोनों समाजों में देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए, भारत में कई सामाजिक अध्ययनों में यह सामने आया है कि संपन्न वृद्धों को अधिक सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है, जबकि आर्थिक रूप से कमजोर वृद्ध उपेक्षा का शिकार हो सकते हैं।

समाज का व्यवहार भी आर्थिक स्थिति के आधार पर बदलता है। जिन वृद्धों के पास धन होता है, उन्हें सामाजिक आयोजनों में विशेष सम्मान दिया जाता है। उनकी उपस्थिति को प्रतिष्ठा से जोड़ा जाता है। दूसरी ओर, आर्थिक रूप से कमजोर वृद्ध अक्सर सामाजिक उपेक्षा या अकेलेपन का सामना

करते हैं। यही कारण है कि विश्व स्तर पर वृद्धों की आर्थिक सुरक्षा पर जोर दिया जाता है।

उदाहरण के तौर पर, संयुक्त राष्ट्रसंघ समय-समय पर वृद्धों के अधिकारों और सामाजिक सुरक्षा पर बल देता रहा है। इसी प्रकार अन्य HelpAge International जैसी संस्थाएँ वृद्धों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए कार्य करती हैं क्योंकि जेब में पैसा होने से वृद्ध व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है। वे स्वयं को उपयोगी और स्वतंत्र महसूस करते हैं। आर्थिक सुरक्षा उन्हें मानसिक शांति देती है, जिसका असर सीधा उनके स्वास्थ्य पर पड़ता है और उनका स्वास्थ्य भी बेहतर रहता है।

इसके विपरीत, वृद्ध व्यक्ति की आर्थिक निर्भरता कई बार हीनभावना, अवसाद और अकेलेपन को जन्म देती है। इसलिए आर्थिक स्थिति केवल बाहरी सम्मान ही नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन को भी प्रभावित करती है। यहाँ एक सामाजिक प्रश्न सामने आता है कि क्या सम्मान का आधार पैसा होना चाहिए?

यह स्थिति एक नैतिक प्रश्न भी खड़ा करती है, क्या किसी वृद्ध का सम्मान केवल उसकी आर्थिक स्थिति पर आधारित होना चाहिए? भारतीय संस्कृति में 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव' की परंपरा रही है, जहाँ बुजुर्गों का सम्मान- उनके अनुभव और जीवन मूल्यों के कारण किया जाता है, न कि उनकी संपत्ति के कारण। फिर भी आधुनिक उपभोक्तावादी समाज में धन की भूमिका इतनी प्रबल हो गई है कि वह रिश्तों की गुणवत्ता को भी प्रभावित करने लगा है।

मेरा मानना है कि जेब में पैसा होना निश्चित रूप से परिवार और समाज के नजरिए को प्रभावित करता है। यह वृद्ध व्यक्ति को आत्मनिर्भरता, निर्णय शक्ति और सामाजिक सम्मान दिला सकता है। लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि सच्चा सम्मान व्यक्ति के अनुभव, त्याग और जीवन मूल्यों के आधार पर होना चाहिए, न कि केवल उसकी आर्थिक क्षमता पर। समाज की परिपक्वता इसी में है कि वह वृद्धों का सम्मान उनकी मानवता और अनुभव के आधार पर करे, चाहे उनकी जेब भरी हो या खाली।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार, बंगलूरु।

## युवा पीढ़ी की निर्णायक क्षमता का विकसित होना बेहद जरूरी

मेरा जन्मदिन चंद्रशेखर आजाद शहीद दिवस के दिन आता है, बिना लोको के तानों की चिंता किए, आजाद का उद्देश्य मनमर्जी के कार्य के जरिए देश का भला करना रहा। चंद्रशेखर आजाद ने पूरी आजादी के साथ अपने जीवन का हर एक निर्णय खुद के दम पर लिया था यहाँ तक की मृत्यु का भी, उनका इमोशनल इंटेलेजेंस लेवल इतना ज्यादा उच्च था कि धरलू माहौल भी उन्हें देशभक्ति के सागर में डूबने से रोक नहीं सका, बल्कि घरवालों ने भी पूरी शिद्दत से उन पर गर्व किया।

लहु का एक रंग बचपन में ही हमें सिखाया गया था कि लहु का एक रंग है, अमीर क्या गरीब क्या? लेकिन राजनैतिक दलदल में फंसे देशवासियों ने अपनी ही गर्दन पर तलवार रख दी, और शिक्षा के सुरक्षा कवच को ही खतरे में डाल दिया, जबकि दुनिया के किसी भी ग्रंथ, वेद या पुराण में हिंसा को कभी भी सर्वोपरि नहीं माना गया है और न ही किसी आस्था स्थल का निर्माण होने से ये बात सिद्ध होती है कि इससे शिष्ट गुणों का संचार भी होगा या नहीं अपराध

कम हो जाएंगे, अगर ऐसा होता तो देश में बढ़ती हुई बेरोजगारी की आंधी न आती और ना ही कानूनी न्याय का आधार कमजोर होता।

गांधीजी ने संयम पथ पर अग्रसर होकर आजादी का रास्ता चुना, इतिहास इस बात का गवाह है कि गरम दल और नरम दल के नेताओं ने एक दूसरे से मतभेद रखे किंतु मनभेद नहीं। मैं अहिंसा और गांधीजी की पक्षधर हु किंतु साथ ही आजाद जैसे व्यक्तित्व की आंतरिक भावनाओं से प्रेरित भी हूँ। वे अक्सर अपने दोस्तों के साथ साइकिल की रेस लगाकर बेहद आर्थिक गरीबी में भी मुस्कराकर खुलकर जिंदगी जी लिया करते थे, तो कभी बेश बदलकर देश की रक्षा करने हेतु पूरी की पूरी पुलिस फोर्स को भी चकमा दे दिया करते थे और धैर्य के साथ अपनी पहचान को वर्षों तक छुपाने में वीरता भी दिखा चुके थे। आज की युवा पीढ़ी में बीमारियों का सबसे बड़ा कारण विज्ञान के प्रति बेरुखी और



डॉ. दर्शना सोनी

धर्माधता का गहरा होना है। समाज में आज भी कई घरों में उस बच्चे या युवा को श्रेष्ठ माना जाता है जो माता पिता की हर बात मान लें किंतु सत्य यही है कि आज भी पैरेंट्स अपने बच्चों को ये सिखाना भूल जाते हैं कि माता पिता को भगवान से भी ऊपर का दर्जा दिया जा सकता है किंतु याद रहे कि माता पिता भी एक इंसान ही है और इंसान गलतियों का पिटारा होता है, इसलिए युवा पीढ़ी की निर्णायक क्षमता का विकसित होना बेहद जरूरी है ताकि अच्छा बेटा या बेटा बनने की उधेड़बुन में कहीं वे अपने अस्तित्व को खो ही न दे। मध्य प्रदेश के हरदा, सिराली, खिरकिया, भोपाल, इंदौर में सभी जगह ऑनलाइन जागरूकता के जरिए आजाद विचारों की कोशिश जारी है, हेल्थ में सुधार हेतु ताकि मानसिकता की कमजोर जड़ पर वार हो सके। देश के कई सर्वोच्च कोचिंग क्लास में भी हेल्थ से जुड़े मुद्दों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता, उन्हें सिर्फ प्रतियोगिता ही करवानी

होती है। साइकोटिक उलझनों का दौर इमानसिक, शारीरिक, सामाजिक बीमारियों से उत्पन्न साइकोसोमैटिक (मन से शरीर पर) और सोमेटोसाइकोटिक (शरीर से मन पर) कष्टों को हराकर जिंदगी की जंग को कैसे जीता जा सकता है। इस विषय पर लगातार प्रयासरत रहकर केमिकल फ्री खानपान, प्राकृतिक दवाइया, एक्सरसाइज योग, स्टोरीटेलिंग, आर्ट, खेल और कई विधाओं के साथ पढ़ लिखकर कैसे मैदानी क्षेत्रों में अपना झंडा गाढ़ा जाए। इस योजना को साधकर गांव से लेकर शहरों तक हमारा संगठन इकोराही अपनी राहों को विकसित करता हुआ दिखाई दे रहा है।

सोशल मीडिया पर Instagram page Ecorahi health hub पेज को फॉलो कर आप भी इस नए अभियान से जुड़ सकते हैं ताकि सच्चा सुख निरोगी काया का सपना आप आजादी के साथ दे देख सकें, लेकिन उसके पहले मुक्त होना होगा हमारे देश के लोगों को अनावश्यक दवाओं और नकारात्मक मानसिकता की गुलामी से।

आज की कविता

### बासंती मन लहर

अंगना बौराये आमों की  
महक मादक  
अंतस पलाश की सी  
दहक पावक  
नयन मुरझाये! हृदय  
उदास बोझिल  
बस तुमसे है मिलन की  
आस, आ मिल!  
प्रियतम आके निकट  
बांचों ना मेरी तुम धड़कन  
नैनों से नैनों की मेरे  
परख लो बहकन  
जीवन पुष्प पंखुड़ियों के  
जैसा नाजुक  
चख लो मधु रस रचा बसा  
जो अमित द्वय अधरना  
कर दो छूकर प्रीत अमर तुम  
अधीर हुई तन मन की गुंजन।।

सीमा स्वरांगनी